The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 4 | Issue 5 | May 2026
ISSN: 2583-973X (Online), SJIF IF: 5.6
Website: www.theacademic.in

भारतीय ज्ञान परम्परा : भारतीय संस्कृति की वैचारिक धरोहर

सोहन लाल रांगेरा

सहायक आचार्य हिंदी, राजकीय महाविद्यालय मनोहरथाना झालावाड़, Sonurangerass@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.20688322

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 25-05-2026

Published: 10-06-2026

Keywords:

भारतीय ज्ञान परंपरा, वेद, उपनिषद, संस्कृति, दर्शन, शिक्षा, योग, आयुर्वेद

ABSTRACT

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध ज्ञान-व्यवस्थाओं में से एक है। यह केवल धार्मिक या आध्यात्मिक विचारों तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन के सामाजिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक, नैतिक तथा दार्शनिक पक्षों को भी व्यापक रूप से समाहित करती है। वेद, उपनिषद, पुराण, रामायण, महाभारत, बौद्ध एवं जैन साहित्य, आयुर्वेद, योग तथा ज्योतिष आदि भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख आधार हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य मानव जीवन को सत्य, नैतिकता, सह-अस्तित्व और आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर करना रहा है। प्रस्तुत शोध-पत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा के स्वरूप, विशेषताओं, प्रमुख आयामों तथा आधुनिक समय में उसकी प्रासंगिकता का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

प्रस्तावना- भारत एशिया महाद्वीप ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के विशाल भू-भाग में अपनी प्राचीन संस्कृति, सभ्यता एवं ज्ञान-परम्परा के कारण विशिष्ट स्थान रखता है। सांस्कृतिक और बौद्धिक दृष्टि से भारत को विश्व की प्राचीनतम सभ्यताओं में सम्मिलित किया जाता है। भारत विश्व की उन प्राचीन सभ्यताओं में से एक है, जिसने ज्ञान, संस्कृति और मानवीय मूल्यों के क्षेत्र में सम्पूर्ण मानव समाज को महत्वपूर्ण दिशा प्रदान की है। भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास अत्यंत प्राचीन एवं गौरवशाली रहा है। यह परंपरा केवल ग्रंथों तक सीमित नहीं रही, बल्कि गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से मौखिक रूप में भी विकसित होती रही। भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना नहीं, बल्कि व्यक्ति के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करना रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में धर्म, दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, गणित, ज्योतिष, कला, साहित्य तथा सामाजिक व्यवस्था आदि अनेक विषयों का समावेश मिलता है। वेदों को इस परंपरा का मूल आधार माना जाता है। उपनिषदों में आत्मा, ब्रह्म तथा मोक्ष जैसे दार्शनिक विषयों का विवेचन किया गया है। इसी प्रकार आयुर्वेद, स्वास्थ्य, विज्ञान, योग मानसिक एवं शारीरिक संतुलन तथा ज्योतिष,खगोलीय ज्ञान का प्रतिनिधित्व करते हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा का स्वरूप - भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्षों से चले आ रहे सुविकसित ज्ञान का एक विस्तृत एवं व्यवहारिक भंडार है। प्राचीन काल से ही भारतवर्ष सदैव ज्ञान परंपरा, विज्ञान, संस्कृत हेतु विख्यात रहा है। विश्व की महानतम प्राचीन सभ्यताएं ज्ञान के क्षेत्र में भारत का ऋण स्वीकार करती आई है। यह ज्ञान भाषा, दर्शन ज्ञान की व्यवहारिकता, लोक कला, मूर्ति कला इत्यादि पर आधारित है। भारतवर्ष की प्राचीनतम ज्ञान परंपरा का प्रारंभ वेदों से माना जाता है। समृद्ध तथा वैविध्यपूर्ण ऐतिहासिक भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्षों से गतिशील है जो सदियों से मानव सभ्यता को स्वरूप प्रदान करती रही है। इसका प्रभाव भारत की सीमाओं तक ही नहीं अपितु संसार के विविध देशों तक है। भारतीय ज्ञान धार्मिक,दार्शनिक, वैज्ञानिक विचारों का अद्भुत समन्वय है जो इस अद्वितीय बनाता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा भारत की प्राचीन समृद्ध और निरंतर चलने वाली वैचारिक, वैज्ञानिक व आध्यात्मिक विरासत है जो न केवल धर्म तक सीमित है बल्कि इसमें खगोल, विज्ञान, गणित, चिकित्सा, योग, कला, दर्शन जैसे विविध विषय शामिल हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा भारत की प्राचीन संस्कृति की रीढ़ है, जो स्वास्थ्य, प्रकृति, नैतिकता और दैनिक जीवन से जुड़ी जीवनोपयोगी शिक्षाएँ प्रदान करती है। इसमें आयुर्वेद, योग, वैदिक अध्ययन और पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ सम्मिलित हैं, जिन्होंने भारतीय जीवन शैली को गहराई से प्रभावित किया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा भारत की प्राचीन और सतत सांस्कृतिक विरासत की आधारशिला है। इसमें स्वास्थ्य, नैतिकता, पर्यावरण तथा दैनिक जीवन से संबंधित विविध ज्ञान प्रणालियाँ सम्मिलित हैं। वेद, उपनिषद तथा उनसे संबद्ध दार्शनिक परंपराओं में निहित यह ज्ञान आयुर्वेद, योग, वैदिक शिक्षा और सतत कृषि पद्धतियों जैसी परंपराओं के माध्यम से भारतीय समाज का मार्गदर्शन करता रहा है।

भारतीय ज्ञान परंपरा ने सदियों से कला, विज्ञान, गणित, खगोल, चिकित्सा, आयुर्वेद, दर्शन, पुरातत्व आदि अनेक क्षेत्रों में अपना अप्रतिम योगदान दिया है। भारतीय मनीषियों ने अपने प्रत्यक्ष अनुभव, गहन चिंतन एवं अनुसंधान से वैश्विक स्तर पर भी ज्ञान- विज्ञान के क्षेत्र में महनीय कार्य किया है। यह परंपरा समग्र कल्याण,

नैतिक उत्तरदायित्व तथा मनुष्य और प्रकृति के बीच संतुलित संबंध पर बल देती है, जिसने पीढ़ियों से भारतीय समाज की सामाजिक संरचनाओं और व्यक्तिगत व्यवहार को आकार दिया है। भारतीय ज्ञान-परम्परा इसी सतत सांस्कृतिक एवं बौद्धिक प्रवाह का जीवंत उदाहरण है, जिसने मानव जीवन के आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक तथा वैज्ञानिक पक्षों को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ज्ञान परंपरा आमतौर पर क्षेत्रीय, स्वदेशी, स्थानीय समुदायों की सांस्कृतिक परंपराओं में अंतर निहित ज्ञान प्रणालियों को संदर्भित करती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा का मूल - भारतीय ज्ञान परंपरा में प्राचीन अनुभव, तर्क एवं नैतिकता का समावेश है जिसका मूल मंत्र है "सा विद्या या विमुक्तये"। भारतीय ज्ञान परंपरा भारत की सांस्कृतिक पहचान से गहराई से जुड़ी हुई है। इसकी जड़ें वेद, उपनिषद, महाभारत और रामायण जैसे प्राचीन ग्रंथों में मिलती हैं। इन ग्रंथों में दर्शन, विज्ञान, गणित, खगोलशास्त्र और नैतिकता जैसे विषयों का वर्णन मिलता है, जिन्होंने हजारों वर्षों तक भारतीय कला, संगीत, अनुष्ठानों और शासन व्यवस्था को प्रभावित किया। वैदिक मंत्र प्रकृति के साथ सामंजस्य और नैतिक जीवन पर बल देते हैं, जिनकी छाप आज भी भारतीय त्योहारों और पारिवारिक परंपराओं में दिखाई देती है।

यह ज्ञान परंपरा मौखिक परंपरा, गुरु–शिष्य परंपरा तथा अनुभवात्मक शिक्षा के माध्यम से पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती रही है। इससे सामुदायिक एकता और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण हुआ। सत्य, अहिंसा, करुणा और सेवा जैसे नैतिक मूल्य भारतीय धर्म, सामाजिक जीवन, शिक्षा और दैनिक आचरण को आज भी प्रभावित करते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा ऊर्जा का वह अक्षय स्रोत है जो हमें सिखाता है कि जीवन को कैसे जीना है, व्यवसाय कैसे करना है, समाज को कैसे व्यवस्थित रखना है। ये सभी उद्देश्य शांति व लोक कल्याण के साथ जुड़े हुए हैं। इसका मुख्य उद्देश्य सामग्र विकास के साथ मानव प्रकृति व ब्रह्मांड की परस्पर निर्भरता पर बल देकर विश्व बंधुत्व के भाव को बढ़ावा देना है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक संदर्भ- इसका इतिहास सहस्राब्दियों पुराना है, जो वेदों, उपनिषदों और प्राचीन ग्रंथों से विकसित हुआ। यह केवल धर्म या आध्यात्मिकता तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा (आयुर्वेद), धातु विज्ञान और कला जैसे व्यावहारिक विज्ञान भी शामिल हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा का इतिहास और इसका विकास कई प्रमुख कालों में विभाजित है:

1. **वैदिक काल (लगभग 1500 ईसा पूर्व - 500 ईसा पूर्व)-** भारतीय ज्ञान परंपरा का प्रारंभ **वेद (श्रुति) से माना जाता है। जिसके अंतर्गत** ज्ञान का मूल स्रोत चार वेद—ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद हैं। इनमें केवल धार्मिक श्लोक ही नहीं, बल्कि खगोल शास्त्र, वनस्पति विज्ञान और ब्रह्मांड के नियम भी दर्ज हैं। **उपनिषद, आरण्यक में** जीवन, मृत्यु, आत्मा और परमात्मा के गूढ़ दार्शनिक रहस्यों (ब्रह्म और माया) को स्पष्ट किया गया है।

2. **महाकाव्य और सूत्र काल-** इस काल में जीवन और ब्रह्मांड को समझने के लिए **षड्दर्शन** (छह दर्शन) का विकास हुआ—न्याय, **वैशेषिक**, सांख्य, योग, मीमांसा और वेदांत। साथ **ही** रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों के माध्यम से मानवीय मूल्यों, राजनीति और आचार-विचार को स्थापित किया गया। संस्कृत भाषा को वैज्ञानिक और व्यवस्थित रूप देने के लिए पाणिनि की 'अष्टाध्यायी' रची गई।

3. **बौद्ध और जैन काल-** इस दौरान तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई। यहाँ गणित, खगोल विज्ञान, धर्म और चिकित्सा की शिक्षा दी जाती थी। इसी काल में पाली और प्राकृत भाषाओं में विपुल साहित्य और दार्शनिक विचारों का सृजन हुआ।

4. **शास्त्रीय काल (गुप्त काल से मध्यकाल)-** इस काल में **विज्ञान और गणित के क्षेत्र में** आर्यभट्ट, वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त जैसे महान वैज्ञानिकों ने खगोलिकी, बीजगणित और शून्य की खोज के सिद्धांत दिए। **आयुर्वेद और चिकित्सा के क्षेत्र में** चरक (चिकित्सा) और सुश्रुत (शल्य चिकित्सा) ने स्वास्थ्य विज्ञान को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। धन्वंतरि को चिकित्सा का प्रतीक माना जाता है। **अर्थशास्त्र और राजनीति के क्षेत्र में** चाणक्य द्वारा रचित 'अर्थशास्त्र' में राज्य-संचालन और प्रबंधन के उत्कृष्ट सूत्र दिए गए।

भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताएं- भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप बहुआयामी एवं समन्वयवादी रहा है। इसमें भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के ज्ञान को समान महत्व दिया गया है। भारतीय चिंतकों ने ज्ञान को मानव जीवन के कल्याण का साधन माना। भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

❖आध्यात्मिकता एवं वैज्ञानिकता का संतुलन- भारतीय ज्ञान परंपरा आत्मा और परमात्मा के संबंध पर विशेष बल देती है। साथ ही शारीरिक मानसिक आध्यात्मिक स्वास्थ्य का संतुलन स्थापित करती है।

❖समन्वय की भावना – इसमें विभिन्न विचारधाराओं और मतों का समन्वय मिलता है। भारतीय ज्ञान परंपरा में धर्म व दर्शन का विज्ञान से अद्भुत समन्वय रहा है। यहां की धार्मिक एवं दार्शनिक ग्रन्थों में विज्ञान के सिद्धांतों का गहन विवरण मिलता है जो अद्वितीय है।

❖मानव कल्याण की भावना – "सर्वे भवन्तु सुखिनः" का आदर्श भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार है।

❖प्रकृति के प्रति सम्मान – भारतीय संस्कृति में प्रकृति को पूजनीय माना गया है। नदी पूजा, वृक्ष पूजा आदि के माध्यम से वेद, पुराण, लोक साहित्य में प्रकृति को संरक्षित करने की भावना व्यक्त की गई है।

❖मूल्य आधारित शिक्षा पर बल – भारतीय ज्ञान परंपरा में सत्य, अहिंसा, करुणा, दया एवं सहिष्णुता जैसे मानवीय एवं नैतिक मूल्यों को विशेष महत्व दिया गया है। इसमें करुणामूलक, समतामूलक विचारधारा का समावेश है।

❖प्राणि मात्र के प्रति दया भाव- भारतीय ज्ञान परंपरा में मनुष्य ही नहीं अपितु पशु-पक्षियों के साथ संपूर्ण प्राणी मात्र के प्रति दया की भावना का संदेश है। आज के युग में भोजन से पहले गाय और कुत्ते को रोटी खिलाना, पक्षी शाला का निर्माण, बेजुबानों के लिए परिंडे एवं चुग्गा पात्र बांधना आदि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं।

❖समग्र दृष्टिकोण- भारतीय ज्ञान परंपरा मानव, प्रकृति व ब्रह्मांड की परस्पर निर्भरता पर बल देते हुए विश्व बंधुत्व के भाव को बढ़ावा देती है।

इसके अतिरिक्त अनुभव पर बल, चरित्र निर्माण करना, भावी पीढ़ी के आत्मविश्वास का सशक्तिकरण, अनुभव, अवलोकन, प्रयोग, कठोर विश्लेषण से विकसित, समाज की उन्नति में सहायक, शास्त्रीय ग्रंथों, पांडुलिपियों, मौखिक संचार के रूप में उपलब्धता, प्रकृति, प्राकृतिक संसाधन मानव जीवन को सर्वाधिक महत्व देना, जीवन को सरल व सहज बनाने का प्रयास, व्यावहारिकता से सैद्धांतिकता का क्रम आदि भारतीय ज्ञान परंपरा की अप्रतिम विशेषताएं हैं। भारतीय ज्ञान-परम्परा का स्वरूप अत्यंत व्यापक एवं बहुआयामी रहा है, जो लिखित तथा मौखिक—दोनों रूपों में विकसित हुआ। ऋग्वेद को विश्व का प्राचीनतम ग्रंथ माना जाता है, जिसके माध्यम से भारतीय ज्ञान-संस्कृति का प्रामाणिक स्वरूप स्पष्ट होता है।

यद्यपि भारतीय ज्ञान-परम्परा को वैदिक साहित्य के रचनाकाल से व्यवस्थित रूप में स्वीकार किया जाता है, तथापि यह केवल लिखित और प्रमाणित ज्ञान तक सीमित नहीं है। वस्तुतः भारतीय ज्ञान-परम्परा का उद्भव उससे भी पूर्व मौखिक एवं श्रुति परम्परा के रूप में हुआ था, जिसका संचार गुरु-शिष्य परम्परा द्वारा पीढ़ी-दर-पीढ़ी होता रहा।

भारतीय ज्ञान परंपरा के मुख्य आयाम - भारतीय ज्ञान परम्परा के आयामों में **18 विद्याएँ:** 4 वेद, 6 वेदांग, मीमांसा, न्याय, पुराण, धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, धनुर्वेद, गंधर्ववेद और अर्थशास्त्र। योग, ज्योतिष, गणित, खगोल विज्ञान, धातु कर्म, नैतिक शिक्षा, एवं **64 कलाएँ:** चित्रकला, संगीत, मूर्तिकला, पाक-कला, और वास्तुकला, साहित्य, दर्शन, धार्मिक परंपरा, लोक परंपरा, संस्कृति, शोध, प्रबंधन इत्यादि सम्मिलित है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के आधारभूत तत्त्व- भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीन एवं समृद्ध सांस्कृतिक विरासतों में से एक है। यह परंपरा हजारों वर्षों से निरंतर विकसित होती रही है तथा मानव जीवन के बौद्धिक, आध्यात्मिक और सामाजिक पक्षों को दिशा प्रदान करती आई है। इसके प्रमुख तत्त्व निम्नलिखित हैं—

1. **समन्वयात्मक एवं समग्र दृष्टि-** भारतीय ज्ञान परंपरा जीवन और ज्ञान को अलग-अलग भागों में विभाजित करके नहीं देखती, बल्कि उसे एक समग्र इकाई के रूप में स्वीकार करती है। यहाँ विज्ञान, दर्शन, कला और अध्यात्म एक-दूसरे के पूरक माने गए हैं। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य मानव जीवन को संतुलित, सार्थक और मूल्यनिष्ठ बनाना है।

2. **गुरु-शिष्य परंपरा का महत्व-** भारतीय शिक्षा व्यवस्था का मूल आधार गुरु-शिष्य परंपरा रही है। इस पद्धति में गुरु केवल ज्ञान प्रदान करने वाला शिक्षक नहीं, बल्कि जीवन का मार्गदर्शक माना जाता था। शिष्य भी पूर्ण समर्पण और अनुशासन के साथ शिक्षा ग्रहण करता था। इस प्रणाली ने ज्ञान को सुरक्षित रखने तथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित करने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

3. **अनुभव और व्यवहार पर आधारित ज्ञान-** भारतीय ज्ञान प्रणाली केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं रही, बल्कि अनुभव, अवलोकन और प्रयोग को भी अत्यधिक महत्व दिया गया। यहाँ ज्ञान का उद्देश्य केवल सैद्धांतिक जानकारी देना नहीं बल्कि उसे व्यवहारिक जीवन में उपयोगी बनाना था। इसी कारण कृषि, आयुर्वेद, योग और वास्तुकला जैसे क्षेत्रों में व्यावहारिक ज्ञान का व्यापक विकास हुआ।

4. **नैतिक मूल्यों पर आधारित शिक्षा-** भारतीय ज्ञान परंपरा में शिक्षा को चरित्र निर्माण का साधन माना गया है। सत्य, अहिंसा, दया, सहिष्णुता, अनुशासन और सेवा जैसे नैतिक मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया गया। इसका उद्देश्य ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना था जो समाज और राष्ट्र के प्रति उत्तरदायी हो।

5. **प्रकृति के प्रति सम्मान और संतुलन-** भारतीय चिंतन में प्रकृति को पूजनीय माना गया है। मानव और प्रकृति के बीच संतुलन बनाए रखने पर विशेष बल दिया गया। आयुर्वेद तथा योग जैसी परंपराएँ इसी विचारधारा को व्यक्त करती हैं, जहाँ स्वस्थ जीवन के लिए प्रकृति के साथ सामंजस्य आवश्यक माना गया है।

6. **ज्ञान के विविध आयाम-** भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत व्यापक रही है। इसमें वेद, उपनिषद, दर्शन, न्याय, व्याकरण, आयुर्वेद, गणित, खगोलशास्त्र, संगीत, नृत्य, शिल्पकला तथा युद्धकला जैसे अनेक विषय सम्मिलित रहे हैं। 18 विद्याओं और 64 कलाओं की अवधारणा भारतीय ज्ञान प्रणाली की व्यापकता को दर्शाती है।

7. **अनुसंधान और चिंतन की परंपरा-** भारतीय मनीषियों ने सदैव जिज्ञासा, तर्क और चिंतन को महत्व दिया। सत्य की खोज के लिए निरंतर मनन और अनुसंधान किया गया। यही कारण है कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल परंपरागत मान्यताओं तक सीमित नहीं रही, बल्कि निरंतर विकसित और समृद्ध होती रही।

भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख क्षेत्र-

1. **स्वास्थ्य और कल्याण-** आयुर्वेद और योग शरीर, मन और आत्मा के संतुलन पर बल देते हैं। आयुर्वेद में उपचार से अधिक रोग-निवारण को महत्व दिया गया है। चरक संहिता जैसे ग्रंथ दैनिक दिनचर्या, औषधीय पौधों और संतुलित जीवन शैली को स्वास्थ्य का आधार मानते हैं। पतंजलि योगसूत्र मानसिक अनुशासन और आंतरिक शांति पर बल देते है।

2. **प्रकृति और कृषि -** पारंपरिक कृषि ज्ञान मिट्टी संरक्षण, फसल चक्र और जल प्रबंधन पर आधारित है। यह प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व और संतुलन की भावना को प्रोत्साहित करता है।

3. **विज्ञान और गणित -** प्राचीन भारतीय विद्वानों ने शून्य, दशमलव प्रणाली तथा उन्नत खगोलीय गणनाओं जैसे महत्वपूर्ण योगदान दिए, जिन्होंने विश्व विज्ञान को नई दिशा प्रदान की।

4. **नैतिकता और समाज -** अर्थशास्त्र में शासन, अर्थव्यवस्था और सामाजिक कल्याण के सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन मिलता है। इसमें नैतिक नेतृत्व और सामूहिक हित को महत्व दिया गया है। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, सतत विकास और विश्व शांति के लिए एक जीवंत मार्गदर्शक प्रणाली है। इसका पुनर्जीवन आने वाली पीढ़ियों को सांस्कृतिक ज्ञान और व्यावहारिक समाधान दोनों प्रदान करेगा।

आधुनिक युग में भारतीय ज्ञान परंपरा का महत्व- भारतीय ज्ञान परंपरा केवल प्राचीन इतिहास की धरोहर नहीं है, बल्कि आज के बदलते सामाजिक परिवेश में भी इसकी उपयोगिता अत्यंत व्यापक है। भारतीय संस्कृति में निहित आध्यात्मिक चिंतन, वैज्ञानिक दृष्टि और नैतिक मूल्य आधुनिक समाज को नई दिशा प्रदान करते हैं। वर्तमान समय की अनेक समस्याओं—जैसे मानसिक तनाव, नैतिक पतन, पर्यावरण संकट और सामाजिक असंतुलन—का समाधान भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित दिखाई देता है। यह एक समृद्ध विरासत है जो कई हजार सालों से चली आ रही है। इसमें ज्ञान और विज्ञान लौकिक और पारलौकिक कर्म और धर्म तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है।

भारतीय ज्ञान परंपरा स्वास्थ्य, मनोविज्ञान, तंत्रिका विज्ञान प्रकृति, पर्यावरण और सतत विकास जैसे क्षेत्र के अध्ययन को प्रोत्साहित करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में भरत मुनि ने पहला नाट्यशास्त्र लिखा। चरक और सुश्रुत ने संहिताओं के रूप में आयुर्वेद या आयुर्वेद विज्ञान की रचनाओं की। प्राचीन शिक्षा प्रणाली मानवता को प्रोत्साहित करती थी। भारत के तक्षशिला, नालंदा तथा विक्रमशिला शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केंद्र थे जहां विदेश से कई शिक्षार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते थे।

भारतीय ज्ञान परंपरा सांस्कृतिक अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए महत्वपूर्ण है। यह आर्थिक स्थिरता और बेहतर जीवन स्तर की प्राप्ति की कुंजी है इसलिए महत्वपूर्ण है। यह स्वदेशी उद्योगो को बढ़ावा देने हेतु जिसमें कृषि,मछली पालन,हर्बल तथा आयुर्वेदिक दवाई शामिल है के लिए आवश्यक है। आर्थिक स्थिरता ज्ञान पर निर्भर

करती है। लोगों को यह जानने की आवश्यकता है कि अर्थव्यवस्था कैसे काम करती है। उन्हें प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन विनिमय दरों, विदेशी निवेश और राष्ट्रों की आर्थिक नीतियों को प्रभावित करने वाले मुद्दे शामिल हैं की जानकारी प्राप्त होती है। पारंपरिक ज्ञान आजीविका के स्रोतों में से एक है। स्वास्थ्य लाभ, पर्यावरण और आध्यात्मिकता से जुड़ा है इसलिए कल्याण के लिए महत्वपूर्ण है।

भारतीय पारंपरिक ज्ञान वनों और जैव विविधता के संरक्षण के लिए प्रचुर अवसर प्रदान करता है। जैव विविधता के संरक्षण में स्वदेशी लोग और उनके पारंपरिक तरीके लाभदायक रहे हैं। उदाहरण के लिए गुजरात की मालधारी और राजस्थान की बिश्नोई जनजाति। असमानता से निपटने जलवायु से बचने खाद्य सुरक्षा तथा असुरक्षा जैसे मुद्दों के लिए सहायक है अर्थात सतत विकास की द्योतक। पारंपरिक ज्ञान कुटीर उद्योग को बढ़ावा देगा जिसमें हस्तकला, चित्रकला; मूर्ति कला,सजावटी वस्तुओं की निर्मित तथा अन्य कई हुनर शामिल हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा आधुनिक समस्याओं के लिए सस्ती और टिकाऊ समाधान प्रस्तुत करती है। योग और ध्यान मानसिक तनाव को कम कर मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाते हैं। आयुर्वेद प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने और रोग-निवारण में सहायक है। पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ जल और मिट्टी संरक्षण में सहायक हैं, जिससे खाद्य सुरक्षा और पर्यावरण संतुलन बना रहता है। वर्तमान युग में यह परंपरा स्वास्थ्य संकट और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं से निपटने के लिए पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीक के समन्वय का मार्ग दिखाती है।

निष्कर्ष – कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय लोगों की बौद्धिक संपदा है जो पीढ़ियों से चली आ रही है और उनके अस्तित्व का अभिन्न अंग है। यह भारत की सांस्कृतिक विरासत, रीति-रिवाज, विश्वासों और ज्ञान प्रणालियों को पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित कर रही है। यह पारंपरिक ज्ञान भारत की ज्ञान प्रणाली और पहचान को बढ़ावा देते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा मानव सभ्यता की अमूल्य धरोहर है। यह केवल अतीत का गौरव नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक है। अर्थशास्त्र जैसे ग्रंथ यह सिद्ध करते हैं कि प्राचीन भारत राजनीतिक, आर्थिक और प्रशासनिक दृष्टि से अत्यंत विकसित था।

औपनिवेशिक काल में पश्चिमी इतिहासकारों ने भारतीय ज्ञान परंपरा को पिछड़ा और अवैज्ञानिक सिद्ध करने का प्रयास किया। लॉर्ड मैकॉले की शिक्षा नीति ने भारतीयों में हीन भावना उत्पन्न की और पश्चिमी ज्ञान को श्रेष्ठ बताया। परिणामस्वरूप भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन सीमित होता गया। किन्तु वर्तमान समय में भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्मूल्यांकन का प्रयास किया जा रहा है। नई शिक्षा नीति में भी भारतीय ज्ञान प्रणाली को महत्व दिया गया है।

आवश्यकता इस बात की है कि भारतीय ज्ञान परंपरा का वैज्ञानिक और आलोचनात्मक अध्ययन किया जाए तथा उसे आधुनिक शिक्षा और नीति निर्माण से जोड़ा जाए। इससे न केवल भारत की सांस्कृतिक पहचान सुदृढ़ होगी, बल्कि वैश्विक स्तर पर भारतीय चिंतन को नई प्रतिष्ठा भी प्राप्त होगी।

सन्दर्भ सूची-

1. आचार्य, के. (2019). भारतीय दर्शन का इतिहास. दिल्ली: मोतीलाल बनारसी दास
2. कपिल, एस. के. (2015), भारतीय ज्ञान परंपरा : अवधारणा और अनुप्रयोग, कुरुक्षेत्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन।
3. शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार।
4. सेनगुप्ता, एस. (2019), भारतीय ज्ञान प्रणाली, रूपा पब्लिकेशन्स।
5. तिवारी, बी. के. (2017), भारतीय ज्ञान परंपरा : एक परिचय, कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय प्रकाशन।
6. शर्मा, एस. (2020). भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आधुनिकता. वाराणसी: भारतीय प्रकाशन।